सुभाष पाठक 'ज़िया'

शिवपुरी, मध्यप्रदेश

1

धूप सर पर आ गई है लापता साया हुआ है
छाँव जैसा शख़्स मुझको याद अब आया हुआ है

रेत बिखरी है जहाँ तक देख पाती हैं निगाहें
ख़्वाब पानी का मुझे ये किस जगह लाया हुआ है

दिल को लगता है कि उस पर ज़ेहन करता है हुकूमत
सोचता है ज़ेहन दिल ने उसको भरमाया हुआ है

ख़्वाब देखा जिस्म से ये रूह बाहर आ गई है
और देखा देखने वो शख़्स भी आया हुआ है

आज बैठक ज़िन्दगानी और मेरे झगड़े पर है
हाँ अना तो आ गई,ख़्वाहिश को बुलवाया हुआ है

2

कभी ख़ुशी तो कभी दर्दो- ग़म मज़ाक़ बने
तमाम उम्र ही महफ़िल में हम मज़ाक़ बने

सुनो मैं झूठ नहीं बोलता यक़ीन करो
हुए ज़लील वो तेरी क़सम मज़ाक़ बने

समझ रहे थे कि सीधी बहुत है ये दुनिया
हमें पता नहीं थे पेचो- ख़म मज़ाक़ बने

जो कुछ कहा तो उड़ाई गयी हमारी हँसी
जो चुप रहे हुईं आँखें जो नम मज़ाक़ बने

यहाँ किसी को ज़रूरत नहीं मुहब्बत की
कि हम तो दैर गये या हरम मज़ाक़ बने